[redacted]

RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल-011/2015-17

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

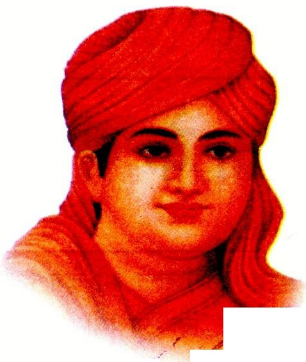

साप्ताहिक
आर्य मर्यादा
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष: 74 अंक : 12
सृष्टि संवत् 1960853118
18 जून, 2017
दयानन्दाब्द 193
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष-74, अंक : 12, 15-18 जून 2017 तदनुसार 9 आषाढ़ सम्वत् 2074 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

मृत्यु का ब्रह्मचारी

-ले० स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

मृत्योरहं ब्रह्मचारी यदस्मि निर्याचन्भूतात्पुरुषं यमाय।
तमहं ब्रह्मणा तपसा श्रमेणानयैनं मेखलया सिनामि।।
-अथर्व० ६।१३३।३

शब्दार्थ-अहम् = मैं **मृत्योः** = मृत्यु का **ब्रह्मचारी** = ब्रह्मचारी हूँ, **यत्** = क्योंकि मैं **भूतात्** = भूतमात्र से **यमाय** = संयम के लिए **पुरुषम्** = पौरुष= पुरुषार्थ को **निर्याचन् अस्मि** = माँग रहा हूँ। **तम्** = उसे **अहम्** = मैं **ब्रह्मणा** = ज्ञान से **तपसा** = तप से तथा **श्रमेण** = परिश्रम से **आनय** = लाकर **एनम्** = इसको **मेखलया** = मेखता से **सिनामि** = बाँधता हूँ।

व्याख्या-ब्रह्मचारी की महिमा अथर्ववेद के ग्यारहवें काण्ड के पाँचवें सूक्त में विस्तार से वर्णित हुई है। अ० ६।१३३ सूक्त भी ब्रह्मचर्य-सम्बन्धी है। इसमें ब्रह्मचर्य के बहिरङ्ग साधन है, वह सभी ब्रह्मचारियों से विलक्षण है। यह है-**मृत्यो.... ब्रह्मचारी** = मौत का ब्रह्मचारी।

मौत को गुरु बनाना अति दुष्कर है। मौत का ब्रह्मचारी तो कोई विरला नचिकेता= सन्देहशून्य ज्ञानी ही बन सकता है। जिसने समस्त संसार का सार देखकर इसे असार मान लिया, जिसे मृत्यु अवश्यम्भावी और नूतन भोगसामग्री देने वाला अथवा मुक्ति का साधन दीख गया है, वह मृत्यु के पास जाता है। अथर्ववेद [११।५।१४] में कहा है-**'आचार्यो मृत्युर्वरुणः सोम ओषधयः पयः। जीमूता आसन् सत्वानस्तैरिदं स्वराभृतम्'** आचार्य, मृत्यु, वरुण [श्रेष्ठ गुणधारण] सोम [शान्ति] औषध, जल या दूध, बादल ये शक्तियाँ हैं, जिन्होंने स्व= सुख धारण कर रखा है। इस जीवन की चिन्ता से छुड़ाकर नये जीवन में नयी भोगसामग्री दिलाना मृत्यु द्वारा सुख दिलाना है। किसी ने कहा है-

जिस मरने से जग डरे मो को सो आनन्द। कब मरिये कब पाइये पूरन परमानन्द।

मौत का ब्रह्मचारी भिक्षा के लिए निकला है। माँगता है-**'भूतात्पुरुषं यमाय'** = यम के लिए = संयम के लिए, अथवा मृत्यु के लिए भूतमात्र से पुरुष = पुरुषार्थ।

वैदिक भारत-कौशल भारत
आर्य महासम्मेलन 5 नवम्बर को नवांशहर में

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में आगामी आर्य महासम्मेलन वैदिक भारत-कौशल भारत **5 नवम्बर 2017** रविवार को नवांशहर में करने का निश्चय किया गया है। इस अवसर पर उच्चकोटि के वैदिक विद्वान् वक्ता, सन्यासी, संगीतज्ञ एवं नेतागण पधारेंगे। कार्यक्रम की विस्तृत सूचना समय-समय पर आपको आर्य मर्यादा साप्ताहिक द्वारा मिलती रहेगी। इसलिए 5 नवम्बर 2017 की तिथि को कोई कार्यक्रम न रखकर पंजाब की सभी आर्य समाजें अधिक से अधिक संख्या में नवांशहर में पहुंच कर अपने संगठन का परिचय दें।

-प्रेम भारद्वाज
महामन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

आचार्य के लिए प्रिय धन लाकर दक्षिणा देनी है। मृत्यु से जीवन माँगता है। जीवन के लिए बल चाहिए, अतः समस्त पदार्थों से बल माँग रहा है। ब्रह्मचारी को भिक्षा मिल गई है। ब्रह्मचारिन् ! यह कैसे मिली ? **'तमहं ब्रह्मणा तपसा श्रमेण....'** मैं उसे ज्ञान, तप और परिश्रम से प्राप्त कर सका हूँ, अर्थात् ब्रह्मचर्य में ज्ञानार्जन, तपोऽनुष्ठान तथा परिश्रम आवश्यक है। मृत्यु सबका-द्विपात्-चतुष्पात् सभी प्राणियों का-ईश है, अतः वह प्रजापति है। उपनयन संस्कार की समाप्ति पर आचार्य कहता है-**'प्रजापतये त्वा परिददामि'** = तुझे प्रजापति = मृत्यु को सौंपता हूँ।

अर्थात् मृत्यु का रहस्य जानने के लिए तू ब्रह्मचारी बना है। ब्रह्मचारी जब सचमुच मृत्यु का ब्रह्मचारी बनकर मृत्यु को परे हटा देता है तब उसका नया जन्म होता है। और-**'तं जातं द्रष्टुमभिसंयन्ति देवाः'** [अथर्व० ११।५।३] = उस नवोत्पन्न को देखने के लिए सभी ओर से विद्वान् आते हैं।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

माता के समान हितकारी गाय की रक्षा करना मनुष्य का परम कर्तव्य

-ले० मनमोहन कुमार आर्य 196 चुक्खूवाला-2 देहरादून-

संसार के जितने भी देश है या यह कहिये कि पृथिवी तल पर जहां-जहां भी मनुष्य है, वहां-वहां गाय भी विद्यमान है। यह व्यवस्था ईश्वर ने मनुष्यों के हितों को देखकर की है। यदि उसे मनुष्य का हित करना अभीष्ट न होता तो ईश्वर गाय को बनाता ही नहीं। मनुष्यों को अपने हित व स्वार्थपूर्ति के लिए गाय की आवश्यकता है, गाय को मनुष्यों की आवश्यकता नहीं है। बिना गाय के मनुष्य का जीवन जल व वायु रहित जीवन के समान होता। गाय एक पालतू पशु है। यदि हम संसार के सभी पशुओं की गणना कर उनसे मनुष्य जीवन को होने वाले लाभों की दृष्टि से तुलना करें तो यह पायेंगे कि सभी पशुओं में गाय ही ऐसा प्राणी है तो मनुष्य के जीवन को चलाने, बढ़ाने, बुद्धि को तीव्र व सूक्ष्म बनाने तथा रोगों से दूर रखने में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस दृष्टि से अन्य पशुओं का योगदान गौण है। मां के दूध की तरह गोमाता का दूध भी मनुष्यों के लिए पूर्ण आहार होता है। बच्चा हो या युवा अथवा वृद्ध, गाय का दूध सभी आयु वर्ग के लोगों के लिए उपयोगी, क्षुधा को दूर करने वाला, स्वास्थयवर्धक, बलवर्धक, आरोग्यकारक, आयु-वर्धक, बुद्धिबल विस्तारक, मनुष्य, समाज व राष्ट्र की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने वाला आदि अनेकानेक गुणों से युक्त है। यदि संसार में गाय न होती तो हमें लगता है कि संसार में मनुष्य भी न होता कारण कि तब कृषि के लिए बैल व खाद कहां से मिलते? मनुष्य व गाय, दोनों एक दूसरे पर आश्रित हैं। गाय के इन्हीं गुणों के कारण वेदों में गोरक्षा पर पर्याप्त शिक्षायें, विचार व ज्ञानयुक्त कथन मिलते हैं। वेद गो को विश्व की माता बताने के साथ इसे विश्व की नाभि भी घोषित करते हैं। गो-हत्यारों के लिए मृत्यु दण्ड का प्राविधान करते हैं। यह व्यवस्था ईश्वर की, वेद ईश्वरीय ज्ञान होने के कारण, है न की अल्पज्ञ व मलिन बुद्धि के मनुष्यों की। आश्चर्य होता है कि कोई विवेक-शील व अल्पज्ञानी मनुष्य ऐसे उपयोगी पशु की हिंसा की वकालत व उसके मांस को भक्ष्य मानने की मूर्खता भी कर सकता है? इसलिए संसार का इससे बड़ा आश्चर्य और कुछ नहीं हो सकता। अपवित्र बुद्धि के लोगों में ही गोहत्या एव उसके मांस के भक्षण की इच्छा हो सकती है। जो भी गाय का मांस खाता है वह ईश्वर व मनुष्य की जीवात्मा के स्वरूप व कर्मफल विधान से पूरी तरह अनभिज्ञ है और यह अनभिज्ञता उसे मूर्ख व अज्ञानी सिद्ध करती है।

वैदिक धर्म में चेतन देवताओं में, ईश्वर के बाद, माता का स्थान आता है। ऐसा क्यों है व इसके पीछे क्या रहस्य वा तर्क हैं? माता बच्चे की जीवात्मा को अपने गर्भ में रखकर उसके शरीर के निर्माण में सहायक होती है और उसे जन्म देने के साथ उसका लालन व पालन भी करती है। यह कार्य किसी सन्तान के प्रति केवल जन्मदात्री मां ही करती है, अत: माता का स्थान किसी भी सन्तान के लिए सर्वोपरि होता है। गाय गोदुग्ध, गोमूत्र व गोबर प्रदान करती है। गोदुग्ध से दही, घृत, मक्खन, मट्ठा, पनीर, खीर, स्वादिष्ट व्यंजन व मिठाईयां आदि अनेक पदार्थ बनाते हैं जो मनुष्य के लिए स्वास्थ्यवर्धक होने के साथ उसकी क्षुधा वा भूख को मिटाते हैं। गोदुग्ध का स्थान अन्न के समान व उससे भी ऊपर है, कारण यह है कि गोदुग्ध पूर्ण आहार है जबकि अलग-अलग अन्न में अपने-अपने विशिष्ट गुण होते हैं और उसे स्वतन्त्र वा अकेले न खाकर अन्य पदार्थों घृत, तेल, नमक, मिर्च, मसाले आदि मिलाकर व उन्हें रसोईघर में पकाकर सेवन किया जाता है जिसके लिए रसोई के नाना प्रकार के सामानों चूल्हे, ईधन, बर्तनों आदि की आवश्यकता होती है। गोदुग्ध ऐसा पूर्ण आहार है जिसे बिना किसी अन्न व रसोई आदि के सामान की अनुपस्थिति में भी सेवन करके स्वस्थ व बलवान रहा जा सकता है। हमारी माताओं का शरीर जिसमें ईश्वर सन्तान का निर्माण करते हैं, उसे भी जिन खाद्य पदार्थ अर्थात् भोजन की आवश्यकता होती है उसकी पूर्ति भी गोदुग्ध व इससे बने पदार्थों से हो जाती है। इस विषय में यह भी कह सकते हैं कि अन्न व फलों की तुलना में गाय व गोदुग्ध आसानी से बारह महीनों व वर्ष के 365 दिन उपलब्ध होता है। माता व सन्तान के शरीरों व उसके प्रत्येक अंग की रचना में गोदुग्ध का महत्वपूर्ण स्थान है। यदि गोदुग्ध न होता तो माता, पिता, सन्तान व अन्य मनुष्यों के शरीर भी न होते। अत: माता व सन्तान दोनों को जीवन देने का काम गोमाता व उसका दुग्ध करता है। इस दृष्टि से गो एक पशु न होकर हमारी जन्मदायिनी माता के समान व उससे भी कई बातों में कुछ अधिक ही सिद्ध होती है। यही कारण है कि वेदों से लेकर हमारे महाप्रज्ञा के धनी ऋषियों ने गो व गोदुग्ध की महत्ता गाई है और गो को अवध्य कहने के साथ गोहत्यारों के गोहत्या के अधम कृत्य के लिए मनुष्य हत्या के समान पाप मानते हुए उसे मार देने का विधान किया है। यह विधान गोमाता के महत्व की दृष्टि से उचित ही है। यहां यह भी विचारणीय एवं जानने योग्य है कि गाय से हमें उसके बच्चे गाय व बैल भी मिलते हैं। गाय से गोदुग्ध आदि अमृत तुल्य आरोग्य एवं बल वर्धक पदार्थों की प्राप्ति होती है तो बैल हमारे खेतों में हल के द्वारा जुताई व बुआई में सहायक होते हैं जिससे हमें भरपूर अन्न तो मिलता ही है साथ ही कृषि के लिए सर्वोत्तम व बिना मूल्य का खाद बैल का गोबर व मूत्र भी मिलता है जो खाद के साथ कीटनाशक का कार्य भी करता है। यह सब उपलब्धियां बिना मूल्य एक गाय से हमें होती हैं।

ऋषि दयानन्द ने देश में सबसे पहले गोरक्षा का कार्य किया और गोहत्या बन्द करने की मांग की थी। इसके लिए उन्होंने एक आन्दोलन भी किया था और गोहत्या बन्द करने के लिए एक मैमोरैन्डम तैयार किया था जो इंग्लैण्ड की महारानी विक्टोरिया को सम्बोधित था। उनका प्रयास था कि देश के करोड़ों लोगों के हस्ताक्षर कराकर इसे वह महारानी विक्टोरिया को भेजेंगे। कार्य तीव्र गति से चल रहा था। लाखों वा करोड़ो लोगों के हस्ताक्षर करा लिये गये थे और कुछ करने शेष थे। इसी बीच उनके विरोधियों ने विष देकर उनका जीवन समाप्त कर दिया। इससे हानि यह हुई कि गोरक्षा, गोसंवर्धन वा गोहत्या बन्दी का काम बीच में अधूरा ही छूट गया। यह भी बता दें कि गांधी जी भी गोरक्षा के प्रबल समर्थक ते। उनका यंग इण्डिया में गोरक्षा के समर्थन लिखा गया लेख उपलब्ध है जिसमें उन्होंने गोरक्षा के विरोधियों के प्रति कठोर कार्यवाही का समर्थन किया है। अत: यदि ऋषि दयानन्द कुछ और वर्ष जीवित रहते या गांधी जी जीवित रहे होते तो अनुमान है कि वह देश में गोहत्या तो किसी कीमत पर न होने देते। हम यह भी बता दें कि स्वामी दयानन्द ने अपनी पुस्तक गोकरुणानिधि में गाय से होने वाले आर्थिक लाभों की गणना कर सिद्ध किया है कि गोरक्षा देश की खाद्यान्न सुरक्षा की गारण्टी है। सभी देशवासियों को इसे निष्पक्ष से पढ़ना चाहिये।

संसार में मांसाहार इसलिए भी बढ़ रहा है कि मांसाहार करने वाले लोगों को मांसाहार के सभी पहलुओं व हानियों का ज्ञान नहीं है। जो लोग पढ़े लिखे व समझदार हैं वह विवेक की कमी, अपनी जीभ के स्वाद व कुछ धार्मिक व अन्य कारणों से इसका प्रचार नहीं करते और न ही आम जनता के सामने सत्य पक्ष को रखते हैं। कई मतों ने इसे अपने धर्म से भी जोड़ रखा है जिसका कारण उनके मतों में इसके पक्ष में कुछ उल्लेख मिलते हैं जो मांसाहार के पोषक हैं। हमारी दृष्टि में उन उल्लेखों को धर्म मानकर मांसाहार को सर्वथा

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सम्पादकीय......

21 जून अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस

योग हमारे ऋषियों-मुनियों द्वारा प्रदत्त वह पद्धति है जिसके द्वारा मनुष्य पूर्ण स्वस्थ और नीरोग जीवन को प्राप्त कर सकता है। शारीरिक व्याधियों से पार पाना ही योग का मुख्य उद्देश्य है। जब तक भारतवर्ष के लोग ऋषियों-मुनियों द्वारा प्रदत्त योग की पद्धति को अपने जीवन का आवश्यक अंग मानते थे, उसके अनुसार जीवन चलाते थे तब तक हमारा देश बीमारियों से रहित था और धन-धान्य से सम्पन्न था। ऋषि प्रदत्त पद्धति का त्याग करने के कारण ही हमारे देश में बीमारियां फैली। पिछले कुछ वर्षों से योग को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जो मान्यता मिली है वह हमारे देश के लिए गौरव का विषय है।

योग का मुख्य उद्देश्य चित्त की एकाग्रता द्वारा आत्मिक, मानसिक तथा बौद्धिक शक्तियों का विकास करना और आत्म साक्षात् द्वारा परम आत्मा तक पहुंचना है। किन्तु जो मन, बुद्धि तथा आत्मा का निवास स्थान है, जो भगवान् का साक्षात् मन्दिर है, वह हमारा शरीर यदि बलवान और स्वस्थ नहीं तो न ही हम अपनी शक्तियों का विकास कर सकते हैं, और न ही परम आत्मा परमेश्वर का दर्शन। वेद में भक्त भगवान से प्रार्थना करता है कि हे प्रभो! हम सुदृढ़ अंगों वाले तेरी स्तुति करने वाले हों। उपनिषदों में भी शारीरिक बल के बिना आत्म दर्शन को असम्भव बताया है-**नायमात्मा बलहीनेन लभ्यः** अर्थात् यह आत्मा बलहीन कमजोर मनुष्य को प्राप्त नहीं होता। अतः योग जहां आत्मिक, मानसिक तथा बौद्धिक उन्नति का उपाय बताता है, वहाँ शारीरिक उन्नति का भी सर्वोत्तम तथा अचूक उपाय हमारे सामने रखता है।

आज परमात्मा की इस अमूल्य देन की दयनीय दशा को देखकर बहुत दुःख होता है। आज सभ्य संसार इस शरीर की अनेक प्रकार की आधि व्याधियों से पीड़ित हो रहा है। सम्भवतः कोई ऐसा सौभाग्यशाली पुरूष होगा कि जिसको किसी न किसी प्रकार की बीमारी ने न घेर रखा हो। इसलिए आज हमारे शरीरों में तथा मनों में न बल है, न उत्साह तथा पवित्रता है और न प्रसन्नता। जीवन की छोटी से छोटी घटनाएं तथा परिस्थितियां भी हमारे निर्बल तथा निस्तेज शरीर तथा मन को विक्षुब्ध तथा अशान्त बना देती हैं। हमारे स्वाभाविक आनन्द को भी नष्ट कर हमें शोक सागर में डुबा देती है। इन सब रोग और व्याधियों का मुख्य कारण हमारी शारीरिक तथा मानसिक निर्बलता और अस्वस्थता ही है और उसमें भी विशेषकर शारीरिक निर्बलता। जिस मनुष्य का शरीर स्वस्थ और बलवान नहीं, वह कभी भी मानसिक चिन्ताओं तथा शारीरिक व्याधियों से मुक्त नहीं हो सकता। उसके पास संसारिक सुख भोग की सामग्री होते हुए भी न तो वह उसे स्वेच्छापूर्वक भोग सकता है और न ही उसके द्वारा सुख और शान्ति को प्राप्त कर सकता है। उसे कोई न कोई मानसिक चिन्ता या शारीरिक बीमारी अवश्य घेरे रहती है। कमजोर शरीर वाले मन में न तो किसी भी कार्य को करने का उत्साह होता है और न ही उमंग। उसका जीवन स्वाभाविक शांति तथा आनन्द से शून्य, सदा नीरस और शुष्क ही बना रहता है। हमारे प्राचीन आचार्यों ने सुखी जीवन के जो लक्षण बताए हैं, आज हममें से शायद ही कोई सौभाग्यशाली होगा, जिसमें ये सारे के सारे लक्षण विद्यमान हों। महर्षि चरक अपने ग्रन्थ में सुखी जीवन के लक्षण बताते हुए लिखते हैं-

जिस मनुष्य को शारीरिक व मानसिक रोग नहीं सताते , जो विशेषकर यौवनावस्था में सब प्रकार के शारीरिक व मानसिक विकारों से रहित है, जिसका बल, वीर्य, यश, पौरूष और पराक्रम सामर्थ्य तथा इच्छा के अनुरूप है, जिसका शरीर नाना प्रकार की विद्याओं, कला कौशल आदि विज्ञान को प्राप्त करने में समर्थ है, जिसकी इन्द्रियां स्वस्थ, बलवान् और इन्द्रियजन्य भोगों को भोगने में समर्थ है, जिसके शरीर में किसी प्रकार की निर्बलता नहीं, उसका जीवन वास्तव में सुखी जीवन है। अतः जिसके शरीर में उपयुक्त गुण विद्यमान नहीं हैं, वह कभी सुखी जीवन नहीं कहला सकता। ऐसे नीरस तथा उत्साहहीन जीवन से न तो इहलोक ही सुधर सकता है और न ही परलोक। अतः इस लोक और परलोक को शांत तथा सुखमय बनाने का यदि कोई मुख्य साधन है तो वह है शारीरिक आरोग्यता। इसीलिए शरीर शास्त्र के आचार्यों ने कहा है-

धर्मार्थकाममोक्षाणामारोग्यं मूलमुत्तमम्।।

अर्थात् धर्म, अर्थ, काम, और मोक्ष जो मानव जीवनरूपी कल्पवृक्ष के चार मधुर फल हैं, उनका यदि कोई श्रेष्ठ तथा मुख्य साधन है तो वह शारीरिक आरोग्यता ही है, क्योंकि यदि हमारा शरीर स्वस्थ और बलवान है तो हम अपने पुरूषार्थ से धन भी कमा सकते हैं, उस धन द्वारा संसारिक सुखों का उपभोग भी कर सकते हैं और परोपकार देश, जाति तथा धर्म की सेवा तथा आत्मचिन्तन और प्रभुभक्ति आदि शुभ कार्य भी कर सकते हैं। इसीलिए महापुरूषों ने कहा है-

शरीरमाद्यं खलु धर्म साधनम्।।

अर्थात् अपने जीवन को धार्मिक तथा सुखमय बनाने का सबसे प्रथम और मुख्य साधन स्वस्थ तथा बलवान् शरीर ही है। इसीलिए हमारे आचार्यों ने शरीर स्वास्थ्य पर बहुत बल दिया है। महर्षि चरक तो यहाँ तक लिखते हैं कि- मनुष्य को अन्य सब काम छोड़कर पहले अपने शरीर की सम्भाल करनी चाहिए क्योंकि अन्य सब धन, सम्पत्ति आदि पदार्थों तथा सुख साधनों के होने पर भी शरीर स्वास्थ्य के बिना वह सब नहीं के समान हैं। इसलिए वेद में मनुष्य को आदेश दिया है कि-

स्वे क्षेत्रे अनमीवा विराज।

हे मनुष्य! तू अपने शरीररूपी क्षेत्र में रोग रहित होकर रह। संसार में जितने भी महापुरूष हुए हैं, उन्होंने भी शारीरिक बल पर विशेष जोर दिया है। आधुनिक युग के महापुरूष महर्षि दयानन्द युवकों को शारीरिक उन्नति का उपदेश देते हुए कहते हैं- बलवान मनुष्य सदा सुखी और प्रसन्न रहता है। निर्बल मनुष्य का जीवन सार रहित, रोगों का घर बना रहता है। अतः अपने शरीर को बलवान् बनाने के लिए खान-पान के समान व्यायाम भी अवश्य करना चाहिए।

पिछले वर्ष की भांति इस वर्ष भी 21 जून को अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया जा रहा है। प्रतिवर्ष 21 जून को योग दिवस मनाने के कारण योग को विश्व में एक नई पहचान मिल रही है। परन्तु योग को हमें अपने जीवन का आवश्यक हिस्सा बनाना होगा। योग किसी एक दिन के लिए नियत वस्तु नहीं है। योग हमारी प्रतिदिन की जीवनचर्या का हिस्सा है। जैसे हम प्रतिदिन भोजन करते है, खाते हैं, पीते हैं। उसी प्रकार योग भी नियमित की जाने वाली क्रिया है। अगर हम अपने जीवन को तनावमुक्त बनाना चाहते हैं तो हमें योग को अपने जीवन की दिनचर्या में शामिल करना होगा। योग हमारे प्राचीन ऋषि- मुनियों के द्वारा प्रदत्त स्वस्थ और निरोग जीवन जीने की पद्धति है। योग साधना के द्वारा, प्राणायाम के द्वारा हमारे ऋषि दीर्घायु को प्राप्त करते थे। योग करने से मानसिक तनाव कम होगा, शरीर निरोग होगा तथा मन में एक नई ऊर्जा का संचार होगा। इसीलिए हम सभी अगर स्वस्थ, मानसिक तनाव से रहित, निरोग और दीर्घायु जीवन व्यतीत करना चाहते हैं तो हमें ऋषियों की पद्धति को अपनाना पड़ेगा। योग की पद्धति को अपनाकर ही एक स्वस्थ और सुन्दर राष्ट्र का निर्माण हो सकता है।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

सन्तान के कल्याण हेतु माता स्वयं वस्त्र बुने

-डॉ. अशोक आर्य १०४ शिप्रा अपार्टमेन्ट, कौशाम्बी २०१०१० गाजियाबाद उ. प्र. भारत चलाभाष ०९३५४८४५४२६

वेद के अनुसार मानव शरीर पर वस्त्रों का विशेष महत्त्व होता है। आज अनेक लोग इस प्रकार के वस्त्र पहनना पसंद करते है, जो शरीर के साथ सटे रहें। इस प्रकार के वस्त्र न केवल शरीर को तना हुआ रखते है बल्कि शरीर से निकलने वाला पसीना भी यह वस्त्र सुखा नहीं पाते, इस कारण यह वस्त्र अनेक प्रकार के रोगों का कारण होता है। इसलिए वस्त्रों के चुनाव का अधिकार भी वेद ने माता को ही दिया है क्योंकि माता अपने बालक की सबसे बड़ी हितचिन्तक होती है। उसकी हितचिंता ही बालक के लिए सब कुछ होता है। यदि माता सुशिक्षित है, वेद ज्ञान से भली प्रकार परिचित है तो वह वेदानुसार स्वास्थ्यवर्धक वस्त्र ही अपनी संतान के लिए चुनती है किन्तु माता के अशिक्षित होने पर, उसे वस्त्रादि के चुनाव का पता न होने से, वह कुछ इस प्रकार के वस्त्रों का चुनाव कर लेती है, जो उसकी संतान के लिए उत्तम नहीं होते। इसलिए भी माता का वेदादि शास्त्रों को सिद्ध करना आवश्यक हो जाता है। हमारी संतानें किस प्रकार के वस्त्र पहनें, इस सम्बन्ध में ऋग्वेद में बहुत ही स्पष्ट संकेत किया गया है: आओ ऋग्वेद के इस मन्त्र का अवलोकन करें, जिस में किस प्रकार के वस्त्र पहनना चाहिए, इस विषय पर विचार व उपदेश किया गया है-

वि तन्वते धियो अस्मा अपांसि वस्त्रा पुत्राय मातरो चयन्ति।। ऋग्वेद ५,४७,६।। माता अपनी संतान के लिए वस्त्र बुने।

मन्त्र व्याख्यान करता है कि अपने पुत्र की सबसे बड़ी हितैषी होने के कारण माता अपनी संतान के लिए वस्त्र बुनती है। इस पंक्ति से यह बात स्पष्ट होती है कि वेद नहीं चाहता कि माता अपनी संतान के लिए बाजार से बने हुए वस्त्र खरीदे और फिर उससे अपनी संतान के लिए इन्हें सिला कर पहनावे। इस प्रकार के बाजारी वस्त्रों में माता का प्रेम नहीं मिल पाता। यह तो केवल धन के व्यय मात्र से ही प्राप्त किये जाते हैं। इन्हें बनाने में माता का स्नेहिल हाथ नहीं लग पाता। इससे बच्चे को वस्त्र के माध्यम से जो मातृ-स्नेह मिलने वाला होता है, उससे वह सदा-सदा के लिए वंचित हो जाता है। इसलिए मन्त्र की पालना करते हुए हमारी पहले की माताऐं अपनी संतान के लिए अपने हाथ से सूत कातती थीं और फिर इसे कातते हुए सूत से अपने हाथों से ही वस्त्र बुनकर उनकी सीलाई भी वह स्वयं करती थीं।

यह सब कार्य करते हुए माता का स्नेह तो इस बालक के साथ जुड़ता ही था साथ ही माता को सूत बनाते हुए, इस सूत से वस्त्र बुनते हुए तथा फिर कपड़े सिलाई करते हुए देख कर बालक को भी बहुत आनंद आता था। इस प्रकार ही माताएं सर्दी में बालकों के लिए स्वेटर, मौजे तथा दस्ताने आदि भी अपने हाथों से बनाती थीं।

इससे एक तो बनाई गई वस्त्र यथावश्यकता होती थी। इन्हें बनाते हुए बालक इसे देखता था, वह पूरे मोहल्ले में कहता था कि मां मेरे लिए वस्त्र बना रही है, इसमें ही उसे आनंद आता था। इसके बनने पर तो वह खूब प्रसन्नता के साथ पहनता था।

आज का युग कुछ अलग ही प्रकार का युग है। आज की माता आराम परस्त बन गई है या फिर व्यवसायी बन गई है। अधिकाँश माताओं के व्यवसायों में लगे होने से उनके पास अपनी संतानों के लिए समय ही नहीं है। उनकी संतानें तो दूसरों के हाथों में पल रही हैं। इस कारण माता का बालक को न तो स्नेह ही मिल पाता है और न ही संस्कार। संस्कारित शिक्षा के बिना आज का बालक संस्कारहीन उच्छ्रिंखल बन रहा है। इस प्रकार की माताओं को देख कर अन्य माताऐं, जो गृहिणी होती हैं, भी घर के कार्य व संतान की देख-रेख के लिए नौकर रखने लगी है तथा स्वयं निठल्लों की भान्ति पूरा दिन चारपाई पर पड़ी टेलीविजन देखती रहती हैं। इस प्रकार स्वयं तो आलसी बनती ही हैं, अपने संतानों को भी आलसी, प्रमादी तथा संस्कारहीन बना देती हैं। यह हानि हुई है वेद के आदेशों को न मानने की।

जब तक माताएं वेद का स्वाध्याय करते हुए वेदानुसार चलती रहीं वह वीरभोग्या कहलाती रही तथा उस की संस्कारित संतान सदा वीर हुआ करती थीं। इस वेद की शिक्षा से दूर होते ही संतान संस्कार हीन होकर अँधेरे से भी डरने लगी है। इसलिए आज आवश्यकता है कि हम पुन: वेदों की छाँव में पूर्ववत् लौट कर अपनी संतान की उन्नति का मार्ग प्रशस्त करें।

कर्म का मार्ग प्रशस्त : वेदानुसार माता अपनी संतान के लिए जो दूसरा काम करती थीं, वह है, माताएं अपने संतानों के लिए कर्म का मार्ग प्रशस्त करती थीं। वह उन्हें बताती थीं कि क्या करणीय है और क्या नहीं। इस प्रकार वह बालकों के कर्मों को भी निश्चित करते हुए बालक को उसके कर्मों के सम्बन्ध में उसका मार्ग दर्शन करती थीं। इससे बालक को पता चलता था कि उसे क्या करना है और क्या नहीं। अच्छे और बुरे कर्म का ज्ञान होने से बालक सदा अच्छे कर्म ही करता था, जिससे उसके लिए उन्नति का मार्ग खुल जाता था और वह निरंतर आगे ही बढ़ता जाता था।

उत्तम कर्मों के कारण उसकी प्रशस्ति कर्म का सम्बन्ध बुद्धि से भी होता है। जो बुरे कर्म करता है तो उसकी बुद्धि भी बुराई की ओर अग्रसर होती है। इस कारण बुरे कर्म करने वाले की बुद्धि भी सदा बुरा ही सोचती है। वह सदा सब का बुरा ही करना चाहती है। इससे उसका अपना तो अपयश होता ही है साथ ही माता, पिता और परिजनों का भी अपयश होता है। दूसरी ओर जिसके उत्तम कर्म होते हैं उसकी बुद्धि भी सदा उत्तम ही करने पर विचार करती है। उसके उत्तम कर्मों के कारण उसकी प्रशस्ति दूर-दूर तक जाती है। उसकी प्रशस्ति के साथ उसके माता पिता तथा मित्रों आदि का नाम भी जुड़ जाता है। इससे उन सब की प्रशस्ति स्वयं ही होने लगती है। यह प्रशस्ति उसे उत्साहित करती है। उस का मन सदा प्रसन्न व प्रफुल्लित रहता है। इससे वह और भी उत्तम कर्म करने पर विचार करता है, जिससे उसकी बुद्धि उन्नत होती है। अत: माता सदा इस प्रकार का यत्न करती है कि उसका बालक उत्तम कर्म करे, उसकी बुद्धि उन्नत हो। यह सब वेदादि शास्त्रों के स्वाध्याय से ही सम्भव हो पाता है। इसलिए हमारी माताओं के लिए आवश्यक है कि वह सदा वेदों का स्वाध्याय करे।

इस सब का भाव यह है कि माता अपनी सन्तान के लिए जहाँ स्वयं वस्त्रादि तैयार करे वहाँ सब प्रकार के आवश्यक कर्मों का मार्ग-दर्शन करते हुए उसकी बुद्धि को उन्नत करते हुए उनके कल्याण का मार्ग खोले, कल्याण का विस्तार करे। माता अपनी सन्तान को सदा सदुपदेश के द्वारा उत्तम ज्ञान व उत्तम बुद्धि दे। सदा उत्तम परामर्श दे। वेद तो कहता है कि माता जहाँ अपनी संन्तानों के लिए वस्त्रादि अपने हाथ से बनावे। यह तो उसके पतिव्रत धर्म का भाग होने से उसका कर्त्तव्य भी है। जब पति को अपनी पत्नि के हाथ के बुने वस्त्र पहनने को मिलते हैं तो उसे भी एक विशेष प्रकार का सुख, एक विशेष प्रकार का आनन्द, एक विशेष प्रकार का स्नेह अनुभव होता है। इससे उसकी कार्य क्षमता बढ़ती है तथा घर धनधान्य ओर खुशियों से भर जाता है।

भय

ले. -नरेन्द्र आहूजा 'विवेक' 602 जी एच 53 सैक्टर 20, पंचकूला मो. 09467608686, 01724001895

अज्ञानता के कारण उत्पन्न हुई चित्त की वह भयानक वृत्ति जो मनुष्य को पतन की ओर ले जाती है भय कहलाती है। भय की उत्पत्ति का मूल कारण अल्पज्ञता अज्ञानता और उससे उत्पन्न अंधविश्वास है। वेदमाता मनुष्य को भय भगाने का सुंदर संदेश देते हुए कहती है **मा भेर्मा संविक्था उर्ज धत्स्व।** यजुर्वेद 6।35 मत डर मत कांप। बल पराक्रम और साहस धारण कर। किसी भी बीमारी के इलाज के लिए उसके मूल कारण को ढूंढ कर उसका निदान करना पड़ता है। ठीक उसी प्रकार इस भय के भूत को भगाने के लिए उसका मूल कारण अर्थात् अज्ञानता को दूर करना आवश्यक है।

मनुष्य के जीवन में सबसे बड़ा भय मृत्यु का होता है। मृत्यु रीशे अर्थात् मृत्यु तो हम सब पर शासन करती है। यह एक अटल सत्य है जिसका भी जन्म हुआ उसकी मृत्यु अवश्य होती है फिर इस ईश्वरीय व्यवस्था से हम इतना भयभीत क्यों रहते हैं। यदि गहराई से चिंतन करें तो इसका एकमात्र कारण मृत्यु के विषय में हमारी अज्ञानता है। हमारी आत्मा तो अजर अमर अविनाशी है। यजुर्वेद में आत्मा की अमरता का स्पष्ट संदेश है **वायुरनिलम-मृतमथेदम्।** 40।5 अर्थात् आत्मा अभौतिक और अमर है। इसी तथ्य को योगेश्वर कृष्ण ने विषाद में फंसे अर्जुन को कर्त्तव्य कर्म के निर्वहन की प्रेरणा देते हुए गीता का अमर ज्ञान देते हुए कहा था-

न जायते म्रियते वा कदाचि-
न्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।
अजो नित्यः शाश्वतोयं
पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे।।

आत्मा की अमरता के रहस्य का ज्ञान होने के बाद मनुष्य को मृत्यु का भय नहीं रहता। जिसे आत्मबोध हो गया वह मृत्यु से क्यों डरेगा। वीर हकीकत राय, महर्षि दयानंद सरीखे ऐसे कितने वीर धीर आत्मज्ञानी हुए जिन्होंने अंतिम समय में हंस कर मृत्यु की देवी का स्वागत किया।

मृत्यु के अतिरिक्त मनुष्य को जीवन में अपनी भौतिक संपत्ति खोने का भय भी बहुत सताता है। इसका एकमात्र कारण भी अज्ञानता है। हमारे पास जो कुछ भी है वह सब उस सुख स्वरूप सबका पालन करने वाले परमपिता परमेश्वर का दिया हुआ ही तो हैं। अब यदि किसी अन्य की दी हुई वस्तु को हम अपना मानकर खुद को उसका स्वामी समझने लगें तो उसके चले जाने पर मोह ममता के कारण एक स्वाभाविक भय दुःख तो उत्पन्न होता ही है। अब यदि हम अपनी समस्त सुख सामग्री धन ऐश्वर्य को ईश्वर प्रदत्त जानकर उसका नित्य प्रति धन्यवाद करते हुए **तेन त्यक्तेन भुंजीथा।** त्याग-पूर्वक उपभोग के भाव से प्रयोग करेंगे तो उसके खो जाने या चले जाने का भय हमें नहीं सतायेगा। ज्ञान के प्रकाश से अपने जीवन को आलोकित करते हुए अज्ञानता के अन्धकार को दूरकर भय संशय को दूर कर सकते हैं।

भय को जीवन से दूर करना अत्यंत आवश्यक है क्योंकि भय से पैदा हुई कुप्रवृत्तियां पुरुषार्थ को खा जाती है। भय पतन और पाप निश्चित कारण है। भय से बुराईयां उत्पन्न होती हैं दुःख आते हैं और मृत्यु आती हैं। समाज में मनुष्य जीवन की सबसे बड़ी त्रासदी है कि वह अज्ञानता और अविश्वास के कारण सदा एक दूसरे से भय-भीत रहता है।

अपने जीवन में भयमुक्त होने का एक सबसे सरल उपाय है ईश्वर के सत्य स्वरूप को जानकर उसकी शरण में अपना सर्वस्व समर्पित करना। एक बार यदि हम अपने को सर्वशक्तिमान निर्भय ईश्वर की शरण में सौंप देते हैं तो निश्चित रूप से हर प्रकार के भय से मुक्त हो जाते हैं। उपनिषदों में स्पष्ट संदेश दिया है-

अभयं वै ब्रह्माभयं हि वै ब्रह्म भवति य एवं वेद।

निश्चित ही ब्रह्म निर्भय है जो उस ब्रह्म को जान लेता है वह ब्रह्म के समान निर्भय अर्थात् भयमुक्त हो जाता है।

मेरी अन्तर्वेदना की पुकार

एक कदम ऋषि के लिये

ले. -प्रमोद शुक्ला आपका प्रतीक्षार्थी

समादरणीय विद्वद्वृन्द! परम-पिता परमात्मा से प्रार्थना है कि परमात्मा आप सभी विद्वानों को शरीर की स्वस्थ्या, नीरोगता व दीर्घायु प्रदान करे।

मनीषीवृन्द! मेरा पत्र लेखन का कारण है विश्व की प्रथम आर्यसमाज की दशा व दिशा।

मुझे नहीं पता है आप में से कितने विद्वानों ने इस आर्यसमाज को प्रत्यक्ष देखा है कितने विद्वानों ने नहीं देखा है लेकिन मैं ऋषिभक्त इस आर्यसमाज में साल के 365 दिन बैठकर रोज हवन करता हूँ और महर्षि की इस धरोहर का प्रतिदिन दर्शन करता हूँ। इतना ही नहीं बल्कि महर्षि की विचारधारा व सिद्धान्तों पर मनन व चिन्तन करता हूँ। मेरा सूर्योदय काकडवाडी आर्यसमाज में प्रवेश करने पर होता है और मेरा सूर्यास्त भी आर्यसमाज में ही होता है।

मैं यह भलीभाँति जानता हूँ आर्यसमाज के लिये अनेक प्रकार से कार्य किये जा रहे हैं। पूर्व में भी किये जा चुके हैं आज भी जगह-जगह आर्यसमाजों की स्थापना की जा रही है व उन आर्यसमाजों को भव्य स्वरूप भी प्रदान किया जा रहा है। किन्तु मेरी जो पीड़ा है वह यह है कि जो विश्व की प्रथम आर्यसमाज है काकडवाडी उसकी ओर किसी भी विद्वान्, मनीषी, चिन्तक व विचारक का ध्यान नहीं है। यह वह आर्यसमाज है आर्यबन्धुओ! जिसकी स्थापना महर्षि दयानन्द के करकमलों द्वारा की गयी थी।

मनीषीवृन्द! आप सभी को यह सम्यक् प्रकार से विदित है कि यह आर्यसमाज महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित प्रथम आर्यसमाज है अतः इस धरोहर को संवारके रखना हम सभी आर्यों का प्रमुख उद्देश्य है। क्योंकि आप सभी इस बात से भली-भाँति परिचित हैं कि देशभर में जगह-जगह भव्य आर्यसमाज बनी हुई हैं किन्तु मुम्बई-4 आर्यसमाज का ऐसा भव्य स्वरूप दिखाई नहीं देता।

अतः आवश्यक है कि हम सब मिलकर एक झण्डे के नीचे आर्य और विश्व की प्रथम आर्यसमाज व महर्षि की इस धरोहर को एक नया स्वरूप प्रदान करें। क्योंकि इसकी भव्यता आर्यसमाज व महर्षि का गौरव है एतदर्थ इसका नवनिर्माण अत्यन्त आवश्यक है।

मनीषीगण ! मैं अनुभव कर रहा हूँ इस आर्यसमाज का स्वरूप अन्य आर्यसमाजों की अपेक्षा बहुत लघु है। जबकि विश्व की प्रथम आर्यसमाज का स्वरूप अत्यन्त भव्य होना चाहिये। यह आर्य समाज हम आर्यों का प्राण है।

अतः यह आर्यसमाज इतनी भव्य होना चाहिए ताकि आर्यसमाज की भव्यता को देख स्वतः प्रतीत हो जाय कि यह विश्व की प्रथम आर्यसमाज है।

मनीषीवृन्द ! मेरी यह उत्कट कामना है कि इसे विशेष आदर दिया जाय व इसे महर्षि की धरोहर के रूप में प्रतिष्ठापित किया जाय व महर्षि के तीर्थ स्थलों में इसकी भी गणना आवश्यक रूप से की जाय।

अतः मनीषीवृन्द व प्यारे ऋषिभक्तो ! आप सभी से मेरा करबद्ध निवेदन है कि आप सभी भक्तजन सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मानांसि जानताम्, मंत्र के उपदेशानुसार आचरण करते हुए एकजुट हो फिर से खड़े हो जायें और काकडवाडी आर्यसमाज का नवनिर्माण कराने व भव्य स्वरूप प्रदान करने में अपना-अपना सहयोग प्रदान करने की कृपा करें।

ऋषिभक्तो! मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप सभी विद्वान् मेरी अन्तर्वेदना को समझ रहे होंगे और इस पर निश्चित रूप से गहन विचार भी करेंगे और मेरी इस काकडवाडी आर्यसमाज की भव्यता से व इसके नवनिर्माण की योजना से पूर्ण सहमत होंगे व तन, मन और धन से एकत्रित होकर विश्व की प्रथम आर्यसमाज को भव्य आर्यसमाज बनाने में मेरा पूरा सहयोग करेंगे। मैं प्रतीक्षारत हूँ। आप अतिशीघ्र ही मुझे सोत्साहित हो उत्तर प्रदान करेंगें।

महर्षि दयानन्द और वेद

ले० पं० खुशहाल चन्द्र आर्य C/o गोबन्दि राय आर्य एण्ड सन्ज १८० महात्मा गान्धी रोड़, (दो तल्ला) कोलकत्ता-700007

महर्षि दयानन्द का वेदों पर बड़ा अटूट विश्वास था। वे वेदों को ईश्वरीय-ज्ञान व सब सत्य विद्याओं के ग्रन्थ मानते थे। साथ ही उनका यह पूर्ण विश्वास था कि यदि विश्व में कभी सुख व शान्ति स्थापित हो सकती है, तो वह वेदों के अनुसार चलने से ही हो सकती है। इसके अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं। कारण उनकी यह मान्यता थी कि ईश्वर ने सृष्टि के आदि में चार ऋषियों जिनके नाम अग्नि, वायु, आदित्य व अंगीरा थे उनके मुख से चार वेद जिनके नाम ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद है, उच्चारित करवाये जिनमें ईश्वर ने वैसे तो प्राणी-मात्र के लिए, नहीं तो विशेष कर मनुष्य-मात्र के लिए बनाये जिनमें बताया है कि मनुष्य को क्या काम करने चाहिए और क्या काम नहीं करने चाहिए जिससे वह धर्म, अर्थ, काम तीनों पुरुषार्थों को धर्म के अनुसार करते हुए अन्तिम पुरुषार्थ मोक्ष को प्राप्त कर सके। जिसको पाने के लिए जीव को ईश्वर धरती पर भेजता है। इसीलिए जिस प्रकार श्री राम को धनुष वाला बोलते हैं, भगवान श्री कृष्ण को बंसी वाला बोलते हैं। उसी प्रकार महर्षि दयानन्द को वेदों वाला बोलते है। महर्षि दयानन्द की वेदों सम्बन्धी निम्नलिखित मान्यताएँ थीं-

१. वेद, ईश्वरीय-ज्ञान है:-महर्षि जी के आने से पहले, वेदों को ऋषि-मुनियों द्वारा बनाए हुए ग्रन्थ मानते थे। परन्तु महर्षि दयानन्द ने अपने सद्गुरू विरजानन्द की गोद में तीन साल बैठ कर सही व्याकरण पतञ्जलीकृत महाभाष्य और अष्टाध्यायी पढ़कर वेदों के मन्त्रों का सही अनुवाद करना सीख लिया, जो पहले आचार्य सायण, महीधर व उब्बट आदि ने वेदों के मन्त्रों का गलत अर्थ लगाकर उनको केवल कर्मकाण्ड के ग्रन्थ समझते थे और उनके हिंसा परक व अश्लील अर्थ लगा दिये थे। जिससे लोगों की वेदों के प्रति अश्रद्धा हो गई थी और उन्हें केवल गडरियों के गीत समझने लगे थे। महर्षि जी ने वेद मन्त्रों के प्रसंग को समझकर सही अर्थ लगाये जिससे यह ज्ञात हुआ कि वेदों को ईश्वर ने बनाया है। मनुष्यों में वेद-मन्त्रों को बनाने की क्षमता ही नहीं है। यह महर्षि जी का मनुष्य-मात्र पर एक बहुत बड़ा उपकार है जिसे भूलना नहीं चाहिए।

२. वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है: महर्षि दयानन्द का मानना था कि वेदों में सब सत्य विद्याएँ हैं। पहले के वेद-भाष्यकार वेदों को केवल कर्म काण्ड के ग्रन्थ ही मानते थे। उनको अनादि न मानकर उनमें इतिहास व हिंसा यानी पशुबलि का वर्णन भी है, ऐसा मानते थे। परन्तु महर्षि जी वेदों को सृष्टि के आदि में ईश्वर का दिया हुआ ज्ञान है जो सब सत्य विद्याओं का संग्रह है जिनके अनुसार चलने से ही मनुष्य मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। ऐसा बताया।

३. वेद-ज्ञान मनुष्यों के लिए सविधान के रूप में है: जिस प्रकार एक राष्ट्र के लिए उसका कोई संविधान होता है, उसी के अनुसार चलने से राष्ट्र उन्नति व समृद्धि को प्राप्त होता है। उसी प्रकार ईश्वर ने वेद-ज्ञान मनुष्यों को संविधान के रूप में दिया है, जिसको पढ़कर तथा उसको अपने जीवन में उतारकर मनुष्य अपनी उन्नति तथा दूसरों की उन्नति करता हुआ, मोक्ष को प्राप्त कर सके जो जीव का अन्तिम व मुख्य उद्देश्य है। यहाँ यह कहलाना भी आवश्यक है कि मोक्ष क्या चीज है ? जो मनुष्य अपने पूरे जीवन में केवल परोपकार के ही काम किये हैं, जिनका खाना-पीना, उठना-बैठना, सोना-जागना सब कार्य परहित के लिए होते हैं जैसे भगवान श्रीकृष्ण व महर्षि दयानन्द का जीवन था। ऐसे महापुरुष मृत्यु के बाद मोक्ष को प्राप्त होते हैं और अनन्त काल तक ईश्वर के सान्निध्य में रहते हुए परम आनन्द को पाते हैं।

४. वेदानुसार चलने से ही विश्व का कल्याण है : जब तक विश्व में वेदों का पढ़ना-पढ़ाना प्रचलित था, तब तक विश्व में परस्पर प्रेम था और सब लोग आनन्द व सुख से अपना जीवन यापन करते थे। महाभारत से करीब एक हजार वर्ष पहले वेदों का पठन-पाठन कम हो गया और महाभारत में अधिकतर विद्वान्, योद्धा, आचार्य, पुरोहित आदि समाप्त हो जाने से वेदों का पठन-पाठन प्राय: लुप्त ही हो गया, तभी से विश्व में अज्ञान, अन्धविश्वास व पाखण्ड का बोल-बाला होता गया। ईश्वर की असीम कृपा से 19वीं शताब्दी में महर्षि दयानन्द इस धरती पर आये। उन्होंने अपने बहुत कठोर परिश्रम से सद्गुरू स्वामी विरजानन्द को ढूढ़ और उसकी गोद में करीब तीन वर्ष बैठकर व्याकरण पर पूरा अधिकार जमाया और फिर वेदों के सही अर्थ करके यह सिद्ध कर दिया कि वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है और सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। इसी को पढ़कर और उसी के अनुसार चलकर हम अपना व विश्व का कल्याण कर सकते हैं। इसी में ईश्वर ने मानव-मात्र को एकता का पाठ पढ़ाया है और पृथ्वी तुम्हारी माता है, तुम सभी उसी के पुत्र व पुत्रियाँ हो ''माता भूमि: पुत्रोऽहम् पृथिव्या:'' कहकर भ्रातृभाव का पाठ पढ़ाया है और विश्व में शान्ति बनाये रखने का पाठ पढ़ाया है। ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' कहकर पूरे विश्व को एक परिवार बताया है। ऐसा एकता का सन्देश वेदों के अलावा और कहाँ मिल सकता है ! अर्थात् कहीं नहीं।

५. वेदों में अन्धविश्वास नहीं है-वेदों में भूत-प्रेत, जादू-टोना, गण्डा-डोरी, सगुन-अपसगुन, शक्ति ज्योतिष आदि नहीं हैं। परन्तु वेदों का पठन-पाठन कम हो जाने से स्वार्थी, मूर्ख व कम पढ़े लोगों ने उनका भय बिठा दिया जिससे अज्ञान, अन्धविश्वास व पाखण्ड का बोल-बोला हो गया। महर्षि जी ने वेदों के आधार पर कहा कि भूत-प्रेत कोई योनि ही नहीं है। उन्होंने बताया कि भूत बीते हुए को कहते हैं और प्रेत, मरे हुए शव को कहते है इसलिए भूत-प्रेत बोलना चालु हो गया। वास्तव में भूत-प्रेत कोई योनि नहीं है। दूसरा अन्धविश्वास व पाखण्ड मूर्त्ति पूजा और अवतारवाद है। अवतारवाद के लिए लोगों की मान्यता है कि जब धरती पर अन्याय बढ़ जाता है तब अन्याय को नष्ट करने के लिए ईश्वर किसी न किसी रूप में अवतार लेता है। जैसे रावण को मारने के लिए राम का अवतार लिया और कंस अन्यायी को मारने के लिए कृष्ण के रूप में अवतार लिया। महर्षि दयानन्द ने कहा कि ईश्वर सर्वव्यापी, निराकार, अजर व अमर है।

अवतार लेने के लिए ईश्वर के यह चारों गुण नष्ट हो जाते हैं, इसलिए ईश्वर अवतार नहीं ले सकता। महर्षि का कहना है कि राम और कृष्ण, ईश्वर नहीं थे, वे महापुरुष थे। इसी प्रकार महर्षि जी ने मूर्त्ति पूजा के लिए भी कहा कि मूर्त्ति जड़ है, उसको किसी प्रकार का ज्ञान नहीं है। जड़ चीज कभी भी किसी का भला या बुरा नहीं कह सकती, इसलिए मूर्त्ति पूजा करना समय को बर्बाद करना है। सामान्य जन कह देता है कि मूर्ति पूजा मोक्ष प्राप्ति की सीढ़ी है पर महर्षि जी कहते हैं कि मूर्ति पूजा, मोक्ष प्राप्ति की सीढ़ी नहीं बल्कि खाई है जिसके अन्ध-विश्वास रूपी खाई में पड़कर नष्ट हो जाता है।

६. वेदानुकूल चलने से ही विश्व शान्ति-सम्भवत: ऊपर लिखी बातों से यह सिद्ध हो जाता है कि विश्व में शान्ति, वेदानुकूल चलने से ही सम्भव है। महाभारत से एक हजार वर्ष पूर्व तक विश्व में केवल वैदिक धर्म ही था, इसलिए विश्व में सुख व शान्ति थी। महाभारत के समय से ही वेद-ज्ञान प्राय: लुप्त होता जा रहा है जिसके कारण विश्व में दु:ख व अशान्ति का बाहुल्य होता जा रहा है, इसलिए हमें महर्षि दयानन्द के बताए वेद-मार्ग को पुन: अपनाना होगा, तभी विश्व में सुख व शान्ति का होना सम्भव है।

शोक समाचार

आर्य समाज जंडियाला गुरू के मन्त्री श्री स्वतन्त्र कुमार जी की धर्मपत्नी श्रीमती ऊषा रानी जी का गत दिनों देहान्त हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। श्रीमती ऊषा रानी धार्मिक विचारों की महिला थी। प्रतिदिन यज्ञ किया करती थी तथा आर्य समाज के कार्यों में बढ़-चढ़ कर भाग लेती थी। उनकी आत्मिक शान्ति के लिए अन्तिम शोक सभा का आयोजन आर्य समाज जंडियाला गुरू में किया गया। सभा के महापदेशक श्री विजय कुमार शास्त्री जी ने शान्ति यज्ञ सम्पन्न कराया। अन्तिम शोक सभा में नगर के सभी गणमान्य महानुभावों ने अपनी हार्दिक श्रद्धासुमन अर्पित किए। श्री विजय कुमार शास्त्री जी ने वेदमन्त्रों के माध्यम से जन्म व मृत्यु के रहस्य को समझाया और उनके जीवन की अच्छाईयों का वर्णन किया। ऐसी दिव्य आत्मा के चले जाने ने न सिर्फ परिवार की क्षति हुई है अपितु समाज की भी हानि हुई है। परमपिता परमात्मा दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं सद्गति प्रदान करके अपने चरणों में स्थान दे तथा शोक संतप्त परिवार को इस असहनीय दु:ख को सहन करने की धैर्य शक्ति प्रदान करे। मैं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की तरफ से, आर्य विद्या परिषद पंजाब की ओर से तथा पंजाब की समस्त आर्य समाजों की ओर से स्व. श्रीमती ऊषा रानी जी को अपने हार्दिक श्रद्धासुमन अर्पित करता हूँ तथा परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि वह पवित्र आत्मा को उनके द्वारा किए गए श्रेष्ठ कर्मों के अनुसार श्रेष्ठ गति प्रदान करे। दु:ख की इस घड़ी में हम सभी शोक संतप्त परिवार के साथ हैं।

-प्रेम भारद्वाज
महामन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

पृष्ठ 2 का शेष-माता के समान हितकारी गाय की रक्षा करना मनुष्य का परम कर्तव्य

छोड़ देना चाहिये। जब साधारण व अज्ञानी मनुष्यों पर प्राण रक्षा का संकट आ जाये तो उस समय वह अपने जीवन की रक्षा के लिए अभक्ष्य पदार्थ का सेवन कर लेते हैं परन्तु सामान्य स्थिति में जब अन्य भक्ष्य पदार्थ प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हों, तब मांसाहार करना रोगों सहित अल्पायु को आमंत्रित करने के साथ कर्मफल सिद्धान्त के अनुसार जन्म-जन्मान्तर में पशुओं के समान जीवन व पीड़ा का भोग कराने वाला होगा। परजन्मों में हमारी स्थिति वैसी ही होगी जैसी की इस जन्म में हमारे निमित्त से अन्य प्राणियों की हुई है। हम समझते हैं कि यदि संसार के सभी लोग ज्ञानी व बुद्धिमान होते और उन्होंने वैदिक धर्म के सिद्धान्तों व उसकी युक्तियों सहित लाभ व हानि को जाना व समझा होता तो वह पवित्र बुद्धि होकर गोहत्या व गोमांसाहार में प्रवृत्त होने का निन्दित कर्म कदापि न करते। हम मांसाहार नहीं करते व हमने जीवन में इसे छोड़ दिया इसका कारण केवल हमारा ज्ञान व विवेक है। यही ज्ञान व विवेक इतर मत-मतान्तरों व लोगों में भी होता तो वह हमारी ही तरह गोरक्षा के समर्थक और गोहत्या व गोमांस के विरोधी होते। यहां भी मत-मतान्तरों की कुछ शिक्षायें व मनुष्यों का अविवेक ही इस समस्या के मूल में ज्ञात होता है।

आर्यसमाज के संस्थापक, वेद और वैदिक साहित्य के द्रष्टा ऋषि दयानन्द ने एक लघु ग्रन्थ '**गोकरुणानिधि**' की रचना की थी। इसकी गवेषणापूर्ण भूमिका के कुछ अंश यहां प्रस्तुत हैं जो गोरक्षा के महत्व पर प्रकाश डालते हैं। ऋषि दयानन्द लिखते हैं कि 'वे धर्मात्मा, विद्वान लोग धन्य हैं, जो ईश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव, अभिप्राय, सृष्टि-क्रम, प्रत्यक्षादि प्रमाण और आप्तों के आचार से अविरुद्ध चल कर सब संसार को सुख पहुंचाते हैं और शोक है उन पर जो कि इनसे विरुद्ध स्वार्थी, दयाहीन होकर जगत् की हानि करने के लिए वर्तमान हैं। पूजनीय जन वो हैं जो अपनी हानि हो तो भी सबका हित करने में अपना तन, मन, धन सब-कुछ लगाते हैं और तिरस्करणीय वे हैं जो अपने ही लाभ में सन्तुष्ट रहकर अन्य के सुखों का नाश करते हैं। वह आगे लिखते हैं कि सृष्टि में ऐसा कौन मनुष्य होगा जो सुख और दुःख को स्वयं न मानता हो ? क्या ऐसा कोई भी मनुष्य है कि जिसके गले को काटे वा रक्षा करें, वह दुःख और सुख को अनुभव न करे? जब सबको लाभ और सुख ही में प्रसन्नता है, तब बिना अपराध किसी प्राणी का प्राण वियोग करके अपना पोषण करना सत्पुरुषों के सामने निन्द्य कर्म क्यों न होवे? सर्वशक्तिमान जगदीश्वर इस सृष्टि में ममुष्यों की आत्माओं में अपनी दया और न्याय को प्रकाशित करे कि जिससे ये सब दया और न्याययुक्त होकर सर्वदा सर्वोपकारक काम करें और स्वार्थपन से पक्षपातयुक्त होकर कृपापात्र गाय आदि पशुओं का विनाश न करें कि जिससे दुग्ध आदि पदार्थों और खेती आदि क्रिया की सिद्धि से युक्त होकर सब मनुष्य आनन्द में रहें।'

महर्षि दयानन्द ने एक गाय की एक पीढ़ी से उत्पन्न बछिया और बैलों से होने वाले दुग्ध व अन्न का गणित व अर्थशास्त्र के अनुसार हिसाब लगाया है और सिद्ध किया है कि एक गाय की एक पीढ़ी से 4,10,440 मनुष्यों का पालन एक समय व एक बार के भोजन के रूप में होता है। यदि गाय की उत्तरोत्तर सन्ततियों पर विचार करें तो गाय से असंख्य मनुष्यों का पालन होता है। गाय का मांसाहार करने से केवल अस्सी मनुष्य एक बार के भोजन के रूप में तृप्त हो सकते हैं। इस पर टिप्पणी करते हुए वह कहते हैं कि 'देखो ! तुच्छ लाभ के लिए लाखों प्राणियों को मार असंख्य मनुष्यों की हानि करना महापाप क्यों नहीं?' गाय के ही समान ऋषि दयानन्द ने भैंस, ऊंटनी व बकरी से मिलने वाले दूध व उससे होने वाले भोजन संबंधी आर्थिक लाभ की गणना कर भी इन पशुओं की रक्षा का भी आहवान व समर्थन किया है। मनुष्य उसे कहते हैं जो मननशील हो। अपने व दूसरों के सुख, दुःख व हानि लाभ को समझे। यदि मनुष्य ऐसा होगा तो वह न तो गोहत्या करेगा, न गोमांस व अन्य पशुओं का ही मांस खायेगा। हमने निष्पक्ष भाव से यह लेख लिखा है। लोग मानवीय व देश के आर्थिक हितों के दृष्टिकोण से इस पर विचार करें तो उन्हें अपने कर्तव्य का बोध हो सकेगा। हमें यह भी आश्चर्य होता है कि लोग कागज के नोटों व जड़ पदार्थों की रक्षा में तो अपना जीवन व्यतीत करने सहित अपने प्राणों को भी दांव पर लगा देते हैं परन्तु ईश्वर द्वारा हमारे हित के लिए बनाये गये गाय आदि प्राणियों पर निर्दयता का व्यवहार करते हैं। उन्हें किस आधार पर मनुष्य कहें हमें समझ में नहीं आता? इसी के साथ इस लेख को विराम देते हैं।

सांस्कृतिक एवं पारितोषिक वितरण समारोह

-पं० वेदप्रकाश शास्त्री, शास्त्री भवन, 4E, कैलाशनगर, फाजिलका, पंजाब

वैदिक शिक्षा परिषद् फाजिल्का द्वारा संचालित वैदिक संस्कृति संरक्षण अभियान-2017 के समापन कार्यक्रम के अन्तर्गत "सांस्कृतिक एवं पारितोषिक वितरण समारोह" आर्य समाज मन्दिर फाजिल्का में श्री नवदीप जसूजा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि के रूप में नगर के सुप्रसिद्ध व्यवसायी श्री देवेन्द्र सचदेवा तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में जाने माने उदारमना समाजसेवी श्री केवल कृष्ण कमरा ने अपने-अपने आसन सुशोभित किए।

संयोजक वेदप्रकाश शास्त्री ने बताया कि इस अभियान के अन्तर्गत बारह स्कूलों में बाईस सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। जिनमें पर्यावरणीय भाषण, निबन्ध, सुलेख, वेदमन्त्रोच्चारण, वाल्मीकीय रामायण श्लोक गायन, गीता श्लोक गायन, धर्मशास्त्रीय श्लोक गायन, सरस्वती वन्दना, शान्तिपाठ, गोमाता वन्दना, वन्दे मातरम्, शिशुगीतम् आदि विषय प्रमुख हैं। इनमें 87 छात्र-छात्राएं विजयी घोषित किए गए। जिन्हें सम्माननीय अतिथियों ने पुरस्कृत किया।

शास्त्री जी के अनुसार वैदिक संस्कृति संरक्षण अभियान का प्रमुख उद्देश्य प्राचीन भारतीय ग्रन्थ वेद, रामायण, गीता, धर्मशास्त्र आदि जो संस्कृत भाषा में हैं, उनसे परिचय करवाना है। महामृत्युंजय, गायत्री महामन्त्र, गोमाता वन्दना, सरस्वती वन्दना सदृश प्रचलित महत्वपूर्ण विषयों की जानकारी भी छात्रों के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। वर्तमान समय में वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार का माध्यम यह प्रतियोगिताएं ही हो सकती हैं।

अन्त में समारोह के अध्यक्ष डॉ० नवदीप जसूजा, मुख्यातिथि श्री देवेन्द्र सचदेवा तथा विशिष्ट अतिथि श्री केवल कृष्ण कमरा ने सभी छात्रों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की। शास्त्री जी ने इस अवसर पर उपस्थित डॉ० सुशील वर्मा, डॉ० अमरलाल बाघला एवं अन्य गणमान्य महानुभावों के प्रति आभार व्यक्त किया।

आर्य समाज धारीवाल में गायत्री महायज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज मन्दिर धारीवाल में विश्व शान्ति, सद्भावना आपसी सौहार्द के लिए गायत्री महायज्ञ 31-5-2017 से प्रारम्भ हुआ था उसकी पूर्णाहुति 4-6-2017 रविवार को डाली गई। पूर्णाहुति के समय सैकड़ों स्त्री-पुरुषों ने भाग लिया। 31-5-2017 से ही वेद कथा आचार्य नारायण सिंह महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब एवं भजनोपदेशक श्री सतीश सुमन जी ने ईश्वरीय भजनों के द्वारा श्रोताओं को निहाल करते रहे। 4-6-2017 का समापन समारोह बहुत ही सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ जिस में जिला गुरदासपुर, पठानकोट की सभी आर्यसमाजों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। सत्संग हाल श्रोताओं के साथ खचाखच भरा हुआ था। इस वार्षिक उत्सव को सफल बनाने के लिये आर्यसमाज के प्रधान श्री सोमनाथ जी, वरिष्ठ उपप्रधान श्री देवेन्द्र नाथ, महामन्त्री श्री जोगिन्द्र पाल शास्त्री, श्री हरीश जी, श्री रवि महाजन तथा श्री अनिल पुरी जी का विशेष योगदान था। ऋषि दयानन्द जी के जयघोषों से समारोह का समापन हुआ। अन्त में ऋषि लंगर का आयोजन भी किया गया था। **-महामन्त्री जोगिन्द्रपाल शास्त्री**

एक शाम ऋषि दयानन्द के नाम

आर्य समाज मंदिर फरीदकोट में दिनांक 3 जून 2017 को एक शाम ऋषि दयानन्द के नाम कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम को यज्ञ के साथ आरम्भ किया गया जिसमें यजमान के पद पर श्री सतीश कुमार शर्मा मंत्री आर्य समाज फरीदकोट बने। यज्ञ के पश्चात ऋषि दयानन्द के जीवन पर आधारित भजनों का बहुत ही सुन्दर ढंग से कार्यक्रम हुआ जिसमें अजय कुमार, पंडित प्रबोध शर्मा, पं. मनोज शर्मा, पं. गोपाल शास्त्री एवं श्री रमेश गुप्ता जी ने भजनों को सुना कर सब का मन मोह लिया। इस शुभ अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के वेद प्रचार अधिष्ठाता श्री सत्य प्रकाश उप्पल एवं आर्य समाज मोगा के प्रधान श्री नरेन्द्र सूद जी, श्री पुरुषोत्तम जी, श्री जोगिन्द्र सिंगला जी, एवं श्री कुंवर सेन जी उपस्थित हुये। मुख्य मेहमान श्री सत्य प्रकाश उप्पल जी की अध्यक्षता में यह कार्यक्रम किया गया। श्री उप्पल जी ने अपने संदेश में कहा कि हम सब मिल जुल कर कार्य करें। हम वेदों की ओर लौटें, आडम्बरों को छोड़ें एवं श्रेष्ठ वैदिक परम्पराओं को अपनाएं।

आर्य समाज मंदिर फरीदकोट के प्रधान श्री कपिल सहूजा, मंत्री श्री सतीश कुमार, वीरेन्द्र कुमार शाह जी और सभी सदस्यों ने मिल कर वेद प्रचार अधिष्ठाता श्री सत्य प्रकाश उप्पल जी का सम्मान पुष्प माला व शाल देकर किया और उनके मार्ग दर्शन में कार्य करने का संकल्प लिया। इस कार्यक्रम के संयोजक एवं संचालक पंडित कमलेश कुमार शास्त्री जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि आर्य समाज मंदिर फरीदकोट के मंत्री श्री सतीश शर्मा जी को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अन्तरंग सदस्य के रूप में सदस्यता दी है इसके लिये पंजाब सभा का बहुत बहुत धन्यवाद। हम निरन्तर वेद प्रचार एवं आर्य समाज का प्रचार प्रसार करते रहेंगे। इस अवसर पर श्री सत्य प्रकाश उप्पल, श्री नरेन्द्र सूद एवं मोगा के सदस्यों द्वारा श्री सतीश शर्मा जी का आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का अन्तरंग सदस्य बनाये जाने पर सम्मान किया गया। अन्त में प्रधान श्री कपिल सहूजा द्वारा सभी का धन्यवाद किया गया। प्रधान जी ने कहा कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब आर्य समाज फरीदकोट को जो भी जिम्मेदारी सौपेंगी हम उसे सहर्ष स्वीकार करेंगे और हर संभव मदद करेंगे। आर्य समाज फरीदकोट वेद प्रचार के कार्यों में हमेशा अग्रणीय रहा है। इस अवसर पर फरीदकोट शहर के गणमान्य व्यक्ति एवं आर्य समाज के सभी अधिकारी, स्त्री आर्य समाज की माताएं एवं बहिनें उपस्थित थीं। अन्त में सभी के लिये जलपान की समुचित व्यवस्था की गई थी।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के वेद प्रचार अधिष्ठाता श्री सत्य प्रकाश उप्पल को सम्मानित करते हुये आर्य समाज फरीदकोट के प्रधान कपिल सहूजा, मंत्री सतीश शर्मा, वीरेन्द्र कुमार शाह, पं.कमलेश शास्त्री व रवि वर्मा जी।

कपिल सहूजा
प्रधान

क्रान्तिकारी राम प्रसाद बिस्मिल का जन्म दिवस मनाया

आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर में साप्ताहिक यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य यजमान डाक्टर अमित शर्मा जी, श्रीमती रितिका शर्मा ने पवित्र पावन वेद मंत्रोच्चारण से आचार्य ज्ञान प्रकाश जी ने पवित्र पावन यज्ञ आहुतियां डलवाई। आर्य समाज की प्रसिद्ध भजन गायिका सोनू भारती ने ईश्वर भक्ति के भजन सुना कर सब को मंत्रमुग्ध कर दिया। आचार्य ज्ञान प्रकाश ने अपने उपदेश में कहा कि विश्वास से ही घर परिवार और राष्ट्र चलता है जिस परिवार में, घर व राष्ट्र में विश्वास की नींव रखी जाती है वह घर व राष्ट्र स्वर्ग है। जिस घर में विश्वास की नींव नहीं है वहां पर हमेशा ही लड़ाई झगड़े का कारण बनता है। आर्य समाज के प्रधान रणजीत आर्य ने राम प्रसाद बिस्मिल को याद करते हुये कहा कि सरफरोशी की तमन्ना जब हमारे दिल में है, देखना है जोर कितना बाजू-ए-कातिल में है। 11 जून को बिस्मिल के जन्म दिन पर उन्हें याद करते हुये समाज को उन के उद्देश्यों से अवगत कराया। उन्होंने बताया कि फांसी के एक दिन पूर्व राम प्रसाद बिस्मिल के पिता उनको अन्तिम बार मुलाकात के लिये गोरखपुर आए हुये थे। कदाचित मां का हृदय इस आघात को सहन न कर सके ऐसा विचार कर विस्मिल की मां को साथ नहीं लाए। बिस्मिल के दल के साथी शिवा वर्मा को लेकर अन्तिम बार पुत्र से मिलने जेल पहुंचे किन्तु वहां पहुंचने पर उन्हें यह देख कर आश्चर्यचकित रह जाना पड़ा कि मां वहां पहले ही पहुंची थी। शिव वर्मा को क्या कह कर अंदर ले जाए ऐसा कुछ सोच पाते मां ने शिव वर्मा को चुप रहने को कह दिया। पूछने पर बता दिया कि मेरी बहन का लड़का है। सब लोग अंदर पहुंचे तो मां को देखते बिस्मिल रो पड़े। उनका मातृ स्नेह आंखों से उमड़ पड़ा। किन्तु वीर जननी मां ने एक वीरांगना की तरह पुत्र की उसके कर्त्तव्य का बोध करते हुये ऊंचे स्वर में कहा कि मेरा बेटा बहादुर है जिनके नाम से अंग्रेज सरकार भी कांपती है। मुझे नहीं पता कि वह मौत से डरता है यदि तुम ने रो कर ही मरना था तो व्यर्थ ही इस काम में क्यों आए? तब क्रान्तिकारी बिस्मिल ने कहा कि यह मौत के डर के आंसू नहीं हैं यह मां का स्नेह है, मौत से मैं नहीं डरता मां तुम विश्वास करो। उसके बाद मां ने शिव वर्मा का हाथ पकड़ कर आगे कर दिया और कहा कि पार्टी के लिये जो भी संदेश देना हो उनसे कह दो, मां के व्यवहार से जेल के अधिकारी भी बहुत प्रभावित हुये।

इसके पश्चात वह फांसी के तख्ते के पास पहुंचे। तख्ते पर चढ़ने से पहले उन्होंने अपनी अन्तिम इच्छा व्यक्त करते हुये उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य के नाश की कामना की। इसके बाद उन्होंने परमात्मा का स्मरण करते हुये वैदिक मंत्रों व ईश्वर स्तुति उपासना का पाठ किया और फांसी के फंदे पर झूल गये। इस अवसर पर हर्ष लखनपाल, ओम प्रकाश मेहता, भूपेन्द्र उपाध्याय, नलिनी उपाध्याय, ईश्वर चन्द्र रामपाल, अश्विनी डोगरा, सुभाष आर्य, अनिल मिश्रा, रविन्द्र आर्य, राज कुमार सेठ, ओम प्रकाश मेहता, पूनम मेहता, कुबेर शर्मा, नन्दनी शर्मा, मदन लाल, ललित मोहन कालिया, तिलक राज, स्वर्ण शर्मा, विजय लक्ष्मी, विजय चावला, सतपाल मल्होत्रा, रसिक वर्मा, नेहा वर्मा, गौरव आर्य, सुदर्शन आर्य, रजनीश सचदेवा, संगीता मल्होत्रा, संगीता तिवारी, धर्मवीर आर्य, इत्यादि शामिल हुए।

राम प्रसाद बिस्मिल के जन्म दिवस पर आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर में हवन यज्ञ करते हुये आर्य जन।

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।
E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।